



असुर गुरु की मायावी अंगूठी

Bhateri Hooda



ब्रह्मांड के गहरे अंधकार में असुरों के गुरु शुक्राचार्य ने एक अत्यंत शक्तिशाली और भयानक अंगूठी का निर्माण किया। इस अंगूठी को स्व भगवान शिव यानी महादेव का वरदान प्राप्त था जिससे इसकी शक्ति सर्वोच्च और अदम्य हो गई थी।



एक भयंकर ब्रह्मांडीय उथल-पुथल के दौरान वह मायावी अंगूठी अंतरिक्ष की गहराइयों को चीरती हुई टूटते तारे की तरह पृथ्वी की ओ गिरने लगी। उसकी काली आभा से पूरा आकाश दहल उठा।



पृथ्वी के एक शांत गाँव में रहने वाले आदित्य नाम के एक साधार और साहसी युवक को जंगल में वह चमकदार रहस्यमयी अंगूठी आर्ध ज़मीन में धँसी हुई मिली। जैसे ही उसने उसे छुआ एक अजीब सी सिह उसके पूरे शरीर में दौड़ गई।



अंगूठी के पृथ्वी पर गिरते ही पाताल लोक में कैद अत्यंत क्रूर अँ भयानक असुर रक्तकेतु जाग उठा। महादेव के वरदान की शक्ति को महसूस कर उसकी आँखें क्रोध और लालच से लाल हो गईं।



रक्तकेतु ने अंगूठी को दोबारा हासिल करने के लिए पृथ्वी पर कदम रखा और विनाश का तांडव शुरू कर दिया। उसकी भयानक गर्ज से आसमान में काले बादल छा गए और चारों तरफ खौफ का माहौल बसा गया।



आदित्य को जल्द ही समझ आ गया कि इस अंगूठी के भीतर असीम अंधकारमयी ऊर्जा छिपी है जो दुनिया को तबाह कर सकती है उसने अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनी और ठान लिया कि वह इस दि शक्ति को असुर के हाथों में कभी नहीं जाने देगा।



अंगूठी की खोज करते हुए क्रूर असुर रक्तकेतु आखिरकार आदित्य के सामने आ खड़ा हुआ। उसकी विशाल और खौफनाक परछाई के सामने आदित्य बहुत छोटा लग रहा था लेकिन उसकी आँखों में डर का नामोनिशान नहीं था।



आदित्य और असुर के बीच एक भयानक और रोंगटे खड़े कर देने वाला युद्ध छिड़ गया। रक्तकेतु ने अपनी जादुई तलवार से वार किया लेकिन अंगूठी से निकली महादेव की दिव्य सुरक्षात्मक ऊर्जा ने आदित्य को हर विनाशकारी प्रहार से बचा लिया।



आदित्य ने अपनी पूरी मानसिक और शारीरिक शक्ति को केंद्रित करके अंगूठी की परम ऊर्जा को जाग्रत किया। एक प्रचंड और दैवीय प्रकाश की किरण फूटी जिसने असुर के अंधकार को चीरना शुरू कर दिया।



महादेव के न्याय की शक्ति के सामने क्रूर असुर रक्तकेतु भस्म हं गया और हमेशा के लिए राख में बदल गया। आदित्य ने उस विनाशका अंगूठी को एक पवित्र और सुरक्षित स्थान पर छुपा दिया ताकि ब्रह्मांड व संतुलन हमेशा बना रहे।